Toppersnotes
Unleash the topper in you

MP - PSC

State Civil Services

Madhya Pradesh Public Service Commission

पेपर - 1 भाग - 4

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

- परिचय 1

प्राचीन भारत

1. हड़प्पा सभ्यता 16
2. वैदिक काल 34
3. बुद्धकाल 45
4. मौर्य साम्राज्य 66
5. मौर्योत्तर काल 79
6. गुप्तकाल 97

मध्यकालीन भारत

1. पूर्वमध्यकाल 109
2. दिल्ली सल्तनत 125
3. मुगलकाल 138

- दक्षिण भारत 153
- आधुनिक भारत 157

प्राचीन भारत

Toppersnotes
Unleash the topper in you

परिचय

भारत का इतिहास एवं संस्कृति

(Indian History and Culture)

इतिहास में वर्तमान में रहकर मानव अतीत/ भूत का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है । कुछ निश्चित साक्ष्यों (साहित्यिक एवं पुरातात्विक) के सहारे अतीत की दोबारा पुनर्रचना की जाती है । इस रूप में इतिहास वर्तमान एवं भूत के बीच एक संवाद (dialogue) कायम करता है । (E.H. कार के अनुसार)
इतिहास के तहत किसी कालखंड में मानव समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति का अध्ययन किया जाता है ।

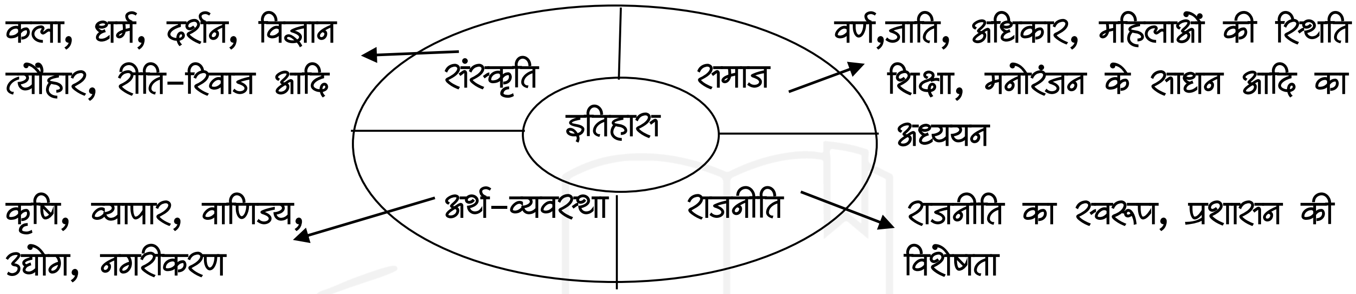

इतिहास एवं काल विभाजन

भारत का इतिहास

- प्राचीन भारत (प्रा. 750 ई.)
- मध्यकालीन भारत (750- 1707 ई.)
- आधुनिक भारत (1707-1947 ई.)

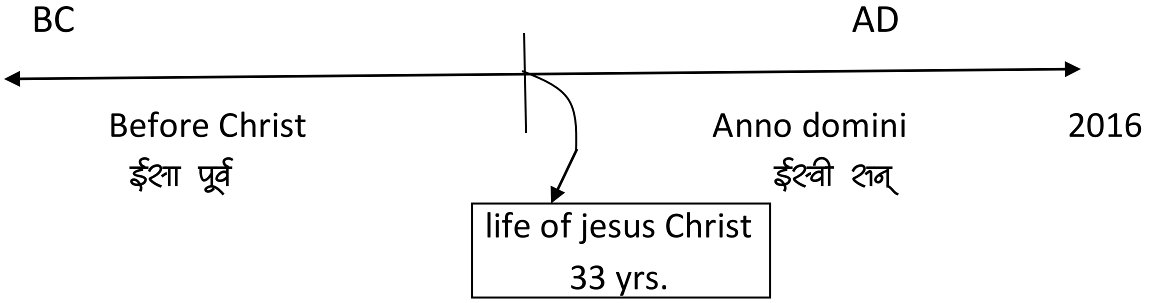

प्राचीन भारत

1. पाषाण काल – { विश्व संदर्भ (20 लाख BC – 3000 BC) (प्राक् इतिहास)
   भारतीय संदर्भ (5 लाख BC – 3000 BC)
2. हड़प्पा सभ्यता (2600 - 1900 BC)
3. वैदिक काल (1500 - 600 BC)
4. मौर्यकाल/ बुद्धकाल (600 - 321 BC)
5. मौर्यकाल (321 - 185 BC)
6. मौर्योत्तर काल (200 BC – 300 AD)

History

7. गुप्त काल (319- 550 AD)
8. गुप्तोत्तर काल (550 - 750 AD)

इतिहास की शब्दावलियाँ (Glossary of History)

1. प्राक् इतिहास (Pre History) – लगभग 20 लाख - 3000 BC तक का कालखंड । इसे जानने के लिए लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।
   अतः पुरातात्विक सामग्रियों (जीवाश्म, पत्थर के औजार, मृदभांड, हड्डियाँ आदि) के सहारे इसे जाना जाता है।
2. आद्य इतिहास (Proto History) – लगभग 3000 - 600 BC का कालखंड। इस काल का लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध है लेकिन इसे पढा नहीं जा सका है । अतः इसे भी पुरातत्व के सहारे जाना जाता है। उदा. - हड़प्पा सभ्यता
3. इतिहास (History) – 600 BC से आगे का कालखंड । यहां से लिखित साक्ष्य भी मिलने प्रारम्भ होते हैं जिन्हें पढ लिया गया है।
4. संस्कृति (Culture) – किसी स्थान या देश विदेश के लोंगों की जीवनशैली को संस्कृति कहा जाता है। इसके तहत कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, भाषा, खानपान, वेशभूषा, रीति-रिवाज, आचारः व्यवहार आदि आता है। इसका निर्माण विभिन्न पीढियों के सामूहिक योगदान से एक लम्बे कालखंड के तहत होता है। संस्कृति सदैव सतत् रूप से (continuously/gradually) विकसित होती रहती है।
5. सभ्यता (Civilization) - संस्कृति के मानकीकरण की व्यवस्था सभ्यता कहलाती है। मानव द्वारा जब उन्नत तकनीकि तथा उच्च आर्थिक। भौतिक समृद्धि की व्यवस्था प्राप्त कर ली जाती है तब इसे सभ्यता की व्यवस्था कहा जाता है। नगरीकरण सभ्यता का आवश्यक लक्षण होता है।

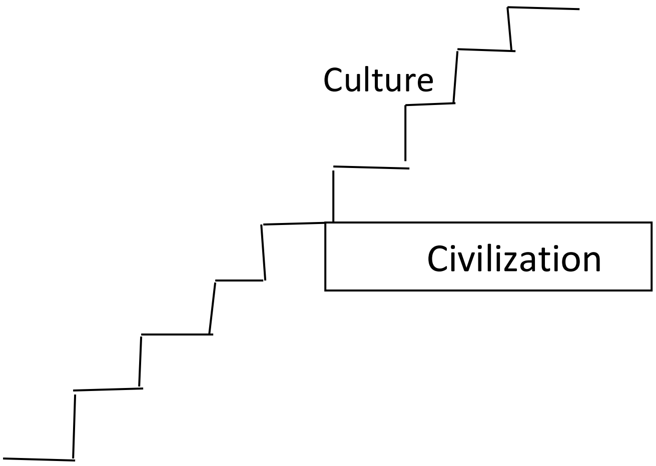

1. पाषाण काल (20 लाख BC)

मानव उद्‌विकास | हिमकाल | पाषाण उपकरण एवं काल विभाजन

<u>मानव उद्‌विकास</u> – पृथ्वी पर मानव जाति बनी बनायी अवतरित नहीं हुई है । बल्कि अपने पूर्ववर्ती जीव रूपों से इनका उद्‌विकास हुआ है ।

1859 में चार्ल्स डार्विन की पुस्तक 'Origin of Species' के प्रकाशन के बाद मानव को उद्‌विकास का परिणाम माना गया। चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त – प्राकृतिक चयन (theory of natural selection) तथा योग्यतम उत्तरजीविता (Survival of the best) के सिद्धान्त को अन्य जीवों के साथ साथ मानव पर भी लागू किया जाता है।

तमाम प्रयोगों से यह बात साबित हो चुकी है कि लगभग 20 लाख BC से 10 हजार BC तक प्राइमेट से मानव का उद्‌विकास हुआ। जिसे निम्नवत देखा जा सकता है –

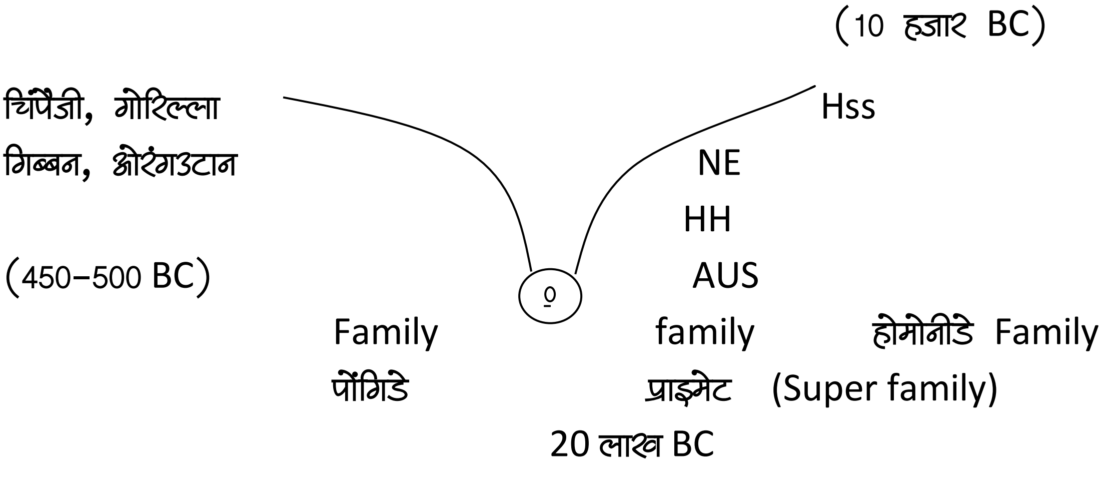

लगभग 26 लाख BC के आस- पास प्राइमेट से आस्ट्रेलोपिथेकस के रूप में प्रथम होमोनीडे का उद्भव हुआ। प्राइमेट तथा आस्ट्रेलोपिथेकस के बीच मुख्य अंतर यह था कि वह (Australo) दो पैरों पर चल सकता था। धीरे धीरे होमोनीडे की विभिन्न प्रजातियों का विकास हुआ। कालक्रम में मानव की कपाल धारिता (Cranial capacity) बढती गई। कई शारीरिक लक्षण उभरते गये। महत्वपूर्ण जीनिक (genetic) परिवर्तन होते गये तथा मानव में बौद्धिक एवं कलात्मक प्रतिभा का विकास हुआ। परिणामस्वरूप भाषा, संचार, कला, ज्ञान, धर्म, विज्ञान, दर्शन, रीति-रिवाज आदि के रूप में मानव संस्कृति का विकास हुआ।

उपप्रकार	Man	CC	Tools	महत्वपूर्ण विशेषता
1. आस्ट्रे. अफ्रीकेनुस 2. आस्ट्रे. रोबोस्टस 3. जेजोनथ्रोपस (ब्रोइसाई)	आस्ट्रेलोपिथेकस (26 लाख BC) Homo Habilis होमो हैबिलिस (20 लाख)	450 - 500 CC 700 CC 800 CC	Pebble (नदियों के बहाव से निर्मित औजारों का प्रयोग) ओल्डुवा	1. मुख्यतः शाकाहारी था। 2. केवल दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका तक सीमित 1. प्रथम उपकरण निर्माता मनुष्य 2. शाकाहारी के साथ साथ मांसाहारी लेकिन छोटे जानवरों का शिकार 3. दक्षिणी - पूर्वी अफ्रीका तक सीमित
1. पिथेकैंथ्रोपस 2. जावामैन 3. पिकेनसिस	Homo Erectus होमो इरेक्टस (17लाख)	850 - 1100 CC	Handaxe हस्तकुठार क्लेक्टोनी लेवालोसियन (गोलाकार) (कछुए के आकार का)	1. प्रथम मनुष्य जो अफ्रीका के बाहर निकला, एशिया तथा यूरोप से भी साक्ष्य प्राप्त 2. यह मैमथ जैसे बडे जानवरों का शिकार करता था। 3. आग का आविष्कार करने वाला प्रथम मनुष्य
	नियन्डरथल (1.35 लाख)	1100 – 1400 CC	Flake (फलक) औजारों का बेहतर प्रयोग करने वाला मुस्तुरिया फ्रांस (संस्कृति का निर्माता)	1. यह पूर्व से भी अधिक दक्ष शिकारी मानव था। 2. यह प्रथम मनुष्य था जिसने शवों को दफनाने की प्रक्रिया का प्रारम्भ किया।
1. क्रोमैमनेन (फ्रांस) 2. ब्रोकनहिल (प.एशिया) 3. ग्रिमाल्डी (आस्ट्रेलिया) 4. संसलाद (South Africa)	Homo sapiens (40 हजार से 10 हजार BC)	1300 – 1600 CC	Flake के और बेहतर औजारों का निर्माण हड्डी + जानवरों के सींग द्वारा बने औजारों का प्रयोग	1. सर्वाधिक दक्ष शिकारी 2. स्पष्ट भाषा बोलनेवाला एवं संचार करने वाला मानव 3. उच्चस्तरीय कला का प्रदर्शन करने वाला मानव (मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि) उदा.- फ्रांस के लास्काव स्पेन के अल्तामीरा तथा भारत के

				भीमबेटका की गुफाओं से सुंदर चित्रकारियाँ प्राप्त हुई है।

<u>मानव उद्विकास एवं विसरण का सिद्धान्तः-</u> जीव विज्ञान में माना जाता है कि प्रारंभिक मानव का विकास सर्वप्रथम दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका में हुआ तथा यहीं से मानव जाति का प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हुआ। इसके वैज्ञानिक तथा पुरातात्विक दोनों साक्ष्य उपलब्ध है।

<u>वैज्ञानिक साक्ष्य</u> – Human जीनोम प्रोजेक्ट (DNA) द्वारा जीन (DNA) की कड़ियों को जोडकर मातृवंशावली तैयार की गई है जो अंतिम रूप से अफ्रीका में जाकर समाप्त हो जाती है।

<u>पुरातात्विक साक्ष्य</u> : अफ्रीका की रिफ्ट घाटी (युगांडा, रवांडा, तंजानिया, केन्या) में ओल्डवाईगार्ज (तंजानिया) तथा तुरकानाझील (केन्या) आदि स्थलों से प्रारंभिक मनुष्यों के जीवाश्मों तथा पत्थर के औजारों की साथ-साथ प्राप्ति हुई है।

<u>उद्विकास के दौरान मानव एवं पर्यावरण सम्बन्ध</u>

(26 लाख – 10 हजार BC)

Pleistocene (अत्यन्त नूतनकाल)

Ice age

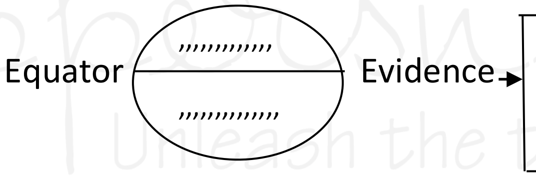

America
Europe (Alps mountain)
India – sohan valley
Now in pakistan

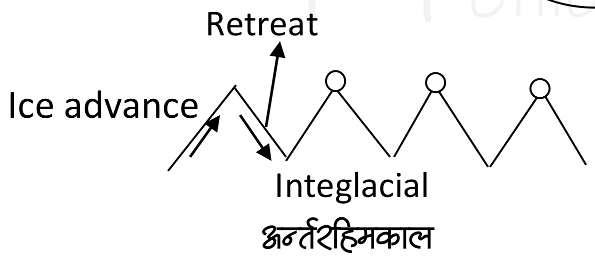

जिस समय मानव का उद्विकास हो रहा था भूमध्य रेखा को छोडकर पूरी पृथ्वी पर बडे बडे हिमयुग के दौर आते रहते थे। बर्फ की आंधियां चला करती थी। कभी – कभी दो बडे हिमकालों के बीच मौसम थोडा सा गर्म एवं शुष्क होता था जिसे अंतःहिमकाल कहा गया है। इन्हीं चरम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मानव ने अपनी उत्तरजीविता कायम की।

<u>पाषाण उपकरण एवं काल विभाजनः-</u> अपने विकास के दौरान मानव ने पत्थर के विभिन्न प्रकार के औजारों का निर्माण किया। इन्हें इनके आकार प्रकार तथा बनावट के आधार पर तीन भागों में बांटकर देखा जाता है। जो निम्न है –

Stone age

पुरापाषाण काल	मध्यपाषाण काल	नवपाषाणकाल
(Paleolithic)	(Mesolithic)	(Neolithic)
(20 लाख – 10 हजार BC)	(10 हजार – 6000 BC)	(6000 – 3000 BC)

मानव मुख्यतः शिकारी + संग्रहकर्त्ता (पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल)

भोजन उत्पादक (नवपाषाणकाल)

1. Human Evolution

Aus. — HH — HE — N — HSS

2. Pleistocene Age

Ice Age

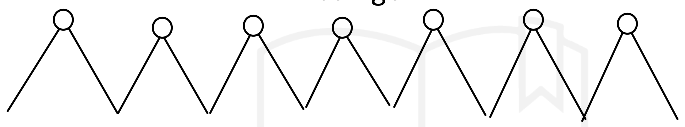

3. Stone Age

पुरापाषाण	मध्यपाषाण	नवपाषाण
Paleolithic	Mesolithic	Neolithic
(20 लाख – 10 हजार)	(10 – 6000 BC)	(6000– 8000)
शिकारी + संग्रहकर्त्ता	Transition	उत्पादक मानव
	संक्रमण काल	कृषि व पशुपालन
		स्थायी आवास
		मृदभाण्ड

शिकारी संग्रह अवस्था से मानव के भोजन उत्पादन अवस्था में बदलाव के कारण

1. जलवायु परिवर्तन का सिद्धान्त – R पेम्पली गार्डन चाइल्ड

Pleistocene (अत्यन्त नूतनकाल) → Holocene (नूतनकाल)

New changes → वनस्पति जात (Flora), प्राणिजात (fauna)

Flora → Experiment → Reason

कृषि, पशुपालन

2. जनसंख्या वृद्धि → विनफोर्ड, मार्ककोहन

→ भोजन पर दबाव पुराना तरीका अक्षम होने होने लगा फलतः मानव नये तरीके की ओर अग्रसर हुआ।

प्रमाण → meso America, Europe, Asia (India)

3. <u>सांस्कृतिक कारण – ब्रेडवुड</u>

→ पूर्व में विकास इसलिए नहीं हुआ कि मानव संस्कृति इसके लिए तैयार नहीं थी। मध्यपाषाण काल तक आते आते मानव ने आपसी विनिमय उपहार, विवाह, नातेदारी प्रारम्भ किया।

↓ New Development हुये।

4. उत्पादन सम्बंध का सिद्धान्त – बारबरा बेण्डर

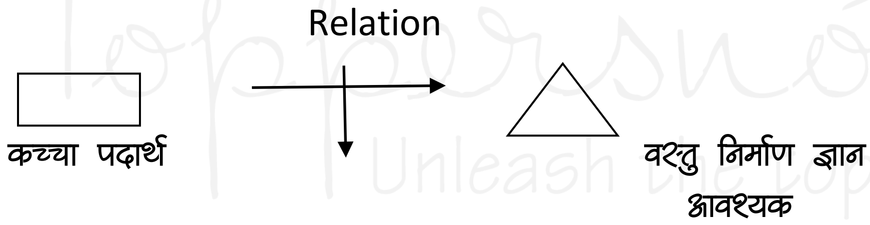

<u>मूल्यांकनः-</u>

शिकारी संग्रहकर्त्ता से भोजन उत्पादन की अवस्था में बदलाव एक बडा परिवर्तन था । अतः किसी एक कारण मानव को इसके लिए जिम्मेदार नहीं माना जा सकता । कमोबेश सभी कारण इसके लिए उत्तरदायी रहे होंगें ।

<u>भारत में पाषाणकाल</u> (**Stone age in India**)

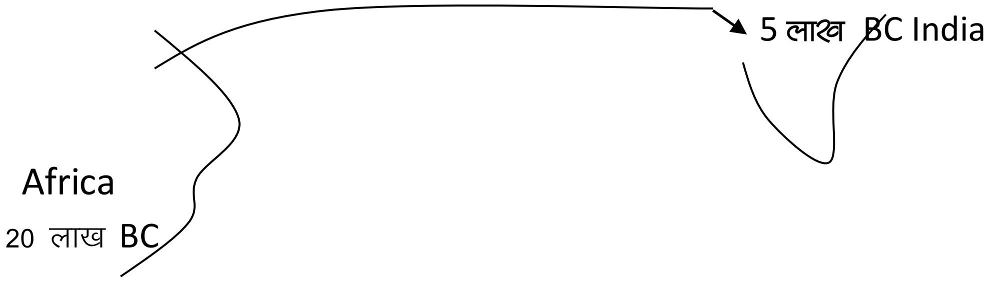

जिस प्रकार मानव के जीवाश्म अफ्रीका, युरोप तथा एशिया के अन्य भागों से प्राप्त होते हैं जलवायु सम्बन्धी समस्या के कारण भारत में इस प्रकार के साक्ष्य नहीं मिलते हैं। अतः भारत में पाषाणकाल का अध्ययन पत्थर के औजारों तथा दूसरे पुरातात्विक सामग्रियों के सहारे किया जाता है। जो निम्न है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Stone age in India

पुरापाषाण काल	मध्यपाषाण काल	नवपाषाण काल
(5 लाख - 10 हजार)	(10 - 6000)	(6000- 3000)

<u>पुरापाषाण काल</u> :- यह एक लम्बा काल था। अतः इसे तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है

निम्नपुरापाषाण	मध्यपुरापाषाण	उच्चपुरापाषाण
Lower Paleolithic	Middle Paleolithic	Upper Paleolithic
(5 लाख - 50 हजार)	(50 हजार - 40 हजार BC)	(40 हजार - 10 हजार)

<u>निम्नपुरापाषाण काल</u>

Tools – उपकरण , Site– स्थल important features– मुख्य विशेषताएं

(a) औजार - इस काल में मानव ने मुख्यतः कोर (core) उपकरणो को निर्माण किया है जो क्वार्टजाइट जैसे कठोर पत्थरों के बने है। मुख्य औजारों में Handaxe (हस्तकुठार), क्लीवर (विदारणी), चापर तथा चापिंग आते हैं।

चापर चापिंग

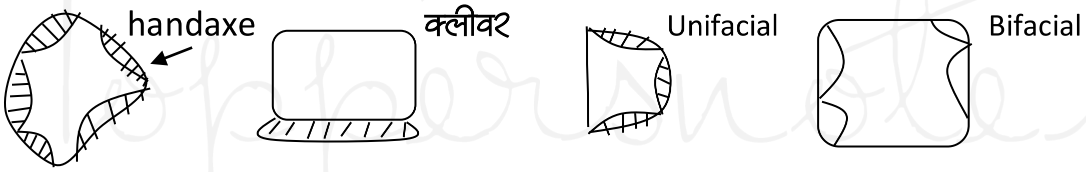

मुख्यतः काटने के लिए प्रयोग | छिलने के लिए प्रयोग | एक ही कार्य धार | दोनों तरफ कार्य धार

(b) <u>स्थल</u> - भारत में इस काल मुख्य स्थल निम्न है

(1) सोहन घाटी (पाकिस्तान)-यह एक प्रतिनिधि स्थल है।

(2) बेलनघाटी (इलाहाबाद,मिर्जापुर क्षेत्र) -यहाँ से पाषाणकाल की तीनों अवस्थाओं के साक्ष्य मिलते है।

(3) डीडवाना (राजस्थान)

(4) भीमबेटका (मध्य प्रदेश)

(5) दक्षिण भारत -पल्लवरम, अतिरपक्कम, गिद्दलूर (तमिलनाडु)

(C) <u>मुख्य विशेषताएं</u>

(1) भारत में पहला handaxe पल्लवरम (चेन्नई के पास) से राबर्टब्रशफुट नें प्राप्त किया था (1863) अगला handaxe अतिरपक्कम से मिला था।

(2) भारत में केवल केरल तथा उपरी गंगा घाटी छोंडकर सभी स्थानों से निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुये है।

(3) विश्व संदर्भ में आस्ट्रेलोपिथिकस hh तथा he तीनों निम्नपुरा-पाषाणकाल से आते है।

मध्यपुरापाषाण काल

(a) औजार : इस काल में मानव के औजार निर्माण में बदलाव हुआ । इसके तहत उसने कोर के बजाय flake (पपडी फलक) पर भारी संख्या मे निर्माण किया है। अतः इसे फलक संस्कृति का काल भी कहा जाता है। ये औजार चर्ट +जैस्पर जैसे नरम पत्थरों के बने है।

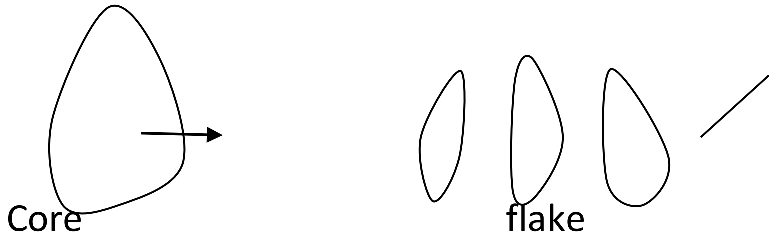

खुरचनी (scraper)
वेधनी (Paint)
वेधक (Borer)
तक्षणी (Burin)

(b) मुख्य स्थल : भारत में नेवासा (गोदावरी तट महाराष्ट्र)तथा नर्मदा घाटी में इस काल के स्थल प्राप्त हुये है।

(c) मुख्य विशेषताएं (1) नर्मदा घाटी में हथनौरा नामक स्थल से अरून ढोलकिया ने एक मानव जीवाश्म प्राप्त किया था। इसे हथनौरा नर्मदामैन कहा जाता है। पूर्व में से होमो इरेक्टस का जीवाश्म माना गया लेकिन वर्तमान में इसे आद्य होमो सेपियन्स का जीवाश्म माना जाता है।

(ii.) विश्व संदर्भ में निएन्डरथल का संबंध इसी मध्यपुरापाषाण काल से है।

उच्चपुरापाषाण काल

(a) इस काल तक आते आते मानव आधुनिक हो चुका था। अतः उसकी गतिविधियों में पूर्व की अपेक्षा और तेजी से वृद्धि हुई । इसकी विशेषताएं निम्न है –

(a) Blade, point Boxer जैसे बेहतर फलक औजारों का निर्माण ।
(b) हड्डी के औजारों का निर्माण ।
(c) मछली मारने वाले कांटे (हारपून) का प्रयोग ।
(d) इस काल में मानव ने कलाओं (मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि) का बेहतर प्रदर्शन किया है।

कला के साक्ष्य (भारत में)

(a) मूर्तिकला : इस काल में मानव द्वारा वीनस (मातृदेवी) की मूर्तियों का निर्माण किया गया है। बेलनघाटी में लोहदानाला नामक स्थल से अस्थि की बनी मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
(b) चित्रकारी पाषाणकालीन चित्रों की विशेषताएं

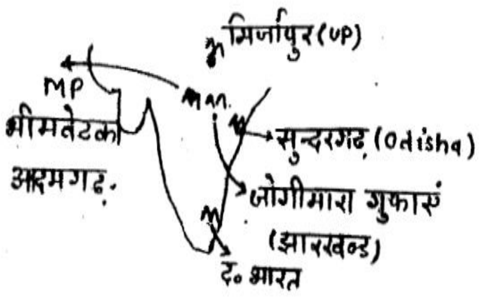

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(1) पाषाणकालीन चित्रों को गुफाओं की दीवारों तथा फर्शों पर पत्थर के नुकीले औजार से खुरदुरा बनाकर चित्रित किया गया है।

(2) गेरूआ तथा (मुख्य रंग), सफेद, हरा, पीला, आदि रंगो का प्रयोग किया गया है।

(3) रंगों का निर्माण प्राकृतिक पदार्थो (वनस्पति ,खनिज आदि) से किया गया है। इसे तेलीय बनाने के लिए अण्डे कि जर्दी तथा पशुओं की चर्बी का मिश्रण किया गया है।

(4) चित्रों का विषय शिकार तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित है। हिरण, बारहसिंहा, नीलगाय, सुअर, जंगली भैंसा आदि जानवरों को घेरकर शिकार करते हुए चित्र बनाये गये हैं। (कुछ विद्वानों का कहना है कि ऐसा उन्होनें जादुई विश्वास के कारण किया है।)

(5) भीमबेटका (मध्य प्रदेश) भारत का पाषाणकालीन चित्रों की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध स्थान है। इसकी लगभग 500 से अधिक गुफाओं में सैकडों चित्र प्राप्त होते हैं। भीमबेटका के चित्रों नृत्य करते हुए, मदिरापान करते हुए, जुलूस में भाग लेते हुए चित्रों को काफी बेहतर चित्र माना जाता है। भीमबेटका के चित्र यूनेस्को के विश्व धरोहर की सूची में शामिल है।

<u>मध्यपाषाण काल</u> (**mesolithic microlithio**)

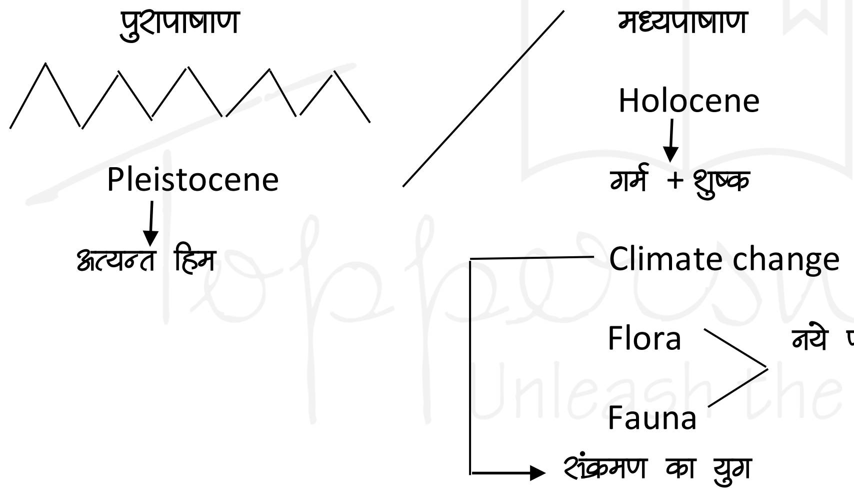

मध्यपाषाण काल संक्रमण का काल था। इस समय पुरानी जलवायु की समाप्ति हुई तथा आज जैसी नई जलवायु का आगमन हुआ। फलतः मानव के औजार , शिकार के तरीके तथा अन्य गतिविधियों में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए ।

<u>विशेषताएं- इस काल की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्न हैं</u> -

(a) औजार - इस समय मानव ने दूर से फेंककर मारने वाले औजारों (प्रक्षेपास्त्र तकनीकी) का निर्माण किया। जिसके तहत तीर, धनुष, भाले आदि का प्रयोग किया गया। उसने पत्थर के छोटे-छोटे औजारों (microlithic) का निर्माण किया जो निम्न हैं-

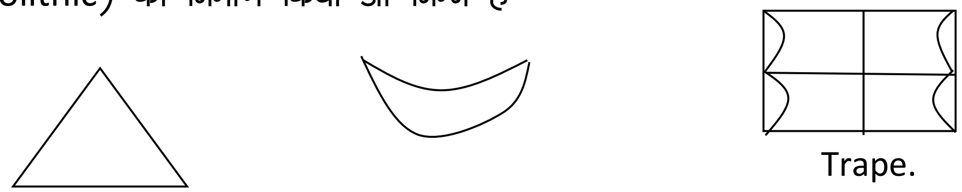

Triangle
त्रिकोण

अर्द्धचंद्रकार

Trape.
समलंब

(b) शिकार एवं भोजन – इस काल में मानव मुख्यतः शिकारी व संग्रहकर्ता ही था। लेकिन उसके शिकार व शिकार करने के तरीके दोनों में बदलाव हुआ । छोटे जानवरों का शिकार करना मछली मारना, पक्षियों का शिकार करना (पर्चिग पक्षी नहीं/अनाज खाने वाली नहीं) खाद्य वस्तुएं बटोरना आदि मानव के मुख्य व्यवसाय थें ।

(c) जनसंख्या वृद्धि-इस काल में जनसंख्या में वृद्धी हुई। इसका मुख्य कारण मानव के आहार में पूर्व की अपेक्षा अधिक विविधता (प्रोटीन,विटामिन्स ,खनिज आदी) का आना था।

(d) यन्त्र तन्त्र कृषि एवं पशुपालन का प्रारम्भ- विश्व संदर्भ में छिटपुट ढंग से कृषि एवं पशुपालन का प्रारम्भ मध्यपाषाण काल में ही हो गया। मानव द्वारा सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू बनाया गया। इन्हे स्लेज गाडियों में प्रयोग किया जाता है। नागोर (राजस्थान), तथा आदमगढ (मध्य प्रदेश) आदि भारतीय स्थानों से पशुपालन क साक्ष्य प्राप्त होते है ।

मध्य गंगा घाटी (बेलनघाटी) के कई महत्वपूर्ण स्थलों-सरायनाहरराय, चोपानीमांडो , महदहा (सभी प्रतापगढ जिले में) से मध्यपाषाण काल के कई महत्वपूर्ण साक्ष्य (अस्थायी आवास ,पशुपालन, शव दफ्नाना आदि) प्राप्त हुऐ है।

Important for pcs – बेलनघाटी के मध्यपाषाणिक स्थल सराय नाहरराय-प्रतापगढ

(a) यहां से पत्थर (प्रस्तर) के औजार (माइक्रोलिथिक) तथा हडडियो के उपकरण मिले है।
(b) इनके आवास घास -फूस के बने थे लेकिन इन्होनें कही-कही पत्थर का फर्श बनाने की कोशिश की है। खुदाई से घरो के चारो तरफ खम्भे गाडने के निशान मिले है।
(c) यहां से भी आवास के साथ एक पंक्ति में तीन शवाधान मिले है।

चोपालीमांडो (बेलनघाटी, इलाहाबाद, उ.प्र.)

(d) यहां से भी स्थायी जीवन के चिन्ह मिले हैं ।
(e) इनके आवास झोपडी के रूप में बने थे। उत्खनन से चूल्हा, चक्कियाँ तथा मूसब प्राप्त हुई है ।

महदहा (मिर्जापुर, UP)

(f) यहां भी पशुओं का बूचडखाना, गोबर रखने के साक्ष्य मिले है ।
(g) यहां भी आवासो के साथ शवाधान मिले है। जुडवा शवाधान प्राप्त होते है ।

<u>नवपाषाणकाल</u> (Neolithic age)

नवपाषाण शब्द को सर्वप्रथम जान लुब्बाक ने दिया।

इसे revolution– गार्डन चाइल्ड ने कहा।

नवपाषाण काल क्रांतिकारी काल था। विश्व संदर्भ में इसकी विशेषताएं निम्न है –

(a) नये प्रकार के औजारों का निर्माण जिन्हें घिसकर, खुदखुदाकर तथा पॉलिश कर बनाया गया है। इसमें कुल्हाडी (axe) तथा Chisel (कुठार) आदि आते हैं ।
(b) विश्व स्तर पर नियमित खेती का प्रारम्भ
(c) ओखली, मूसल एवं सिलबट्टे का प्रयोग
(d) नियमित पशुपालन (पशुपालन का प्रथम साक्ष्य परिचमी एशिया से प्राप्त हुआ है)

(e) मृदभांड, चाक का पहिया

(f) स्थायी आवास एवं ग्रामीण समुदाय का विकास कृषि

नवपाषाणिक क्रान्ति का मुद्दा

नवपाषाणिक विशेषताएं अपने स्वरूप में काफी क्रांतिकारी थी। अतः गार्डन चाइल्ड जैसे विद्वानों ने इसे क्रांतिकारी काल की संज्ञा दी है। हांलाकि कुछ विद्वानों का मानना है कि खेती, पशुपालन आदि का प्रारम्भ मध्यपाषाण काल में ही हो चुका था तो क्यों न इसी काल को क्रांति के काल की संज्ञा दी जाये। इसका उत्तर देते हुए गार्डन चाइल्ड ने कहा है कि नवपाषाण से पहले कृषि एवं पशुपालन आदि से कोई गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन नहीं हुआ। यह परिवर्तन नवपाषाण काल में हुआ। अतः इसे ही क्रांति का काल कहना उचित है। अधिकांश विद्वान गार्डन चाइल्ड की बातों से सहमति रखते हैं।

नोट – 1. पूर्व में कृषि के विसरण सिद्धान्त के तहत यह माना जाता था कि कृषि का प्रारम्भ नतूफियन संस्कृति (इजराइल, फिलिस्तीन, जॉर्डन, सीरिया/ धवन्याकार प्रदेश) में सर्वप्रथम हुआ। लेकिन अब इसे नहीं माना जाता। अब माना जाता है कि विभिन्न अनाजों की खेती दुनिया में स्वतंत्र रूप से अलग अलग प्रारम्भ हुई। जैसे पश्चिमी एशिया में सर्वप्रथम जौ तथा गेहूं, भारत में सर्वप्रथम चावल तथा कपास तथा अमेरिका में सर्वप्रथम मक्का की कृषि प्रारम्भ हुई।

2. मानव द्वारा उपजाये जाने वाली फसलों का क्रम – जौ, गेहूं, चावल ।

3. मृदभांड निर्माण नवपाषाण काल की अपरिहार्य विशेषता नहीं है। ऐसी भी नवपाषाणिक बस्तियां प्राप्त हुई हैं जहां से मृदभांड नहीं मिला है।

भारत में नवपाषाण कालः-भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाणकाल के कई स्थल प्राप्त हुये हैं। लेकिन सभी क्षेत्रों की विशेषताएं एक जैसी (एकरूपता) नहीं है बल्कि इनमें क्षेत्रीय अन्तर दिखाई देते हैं।

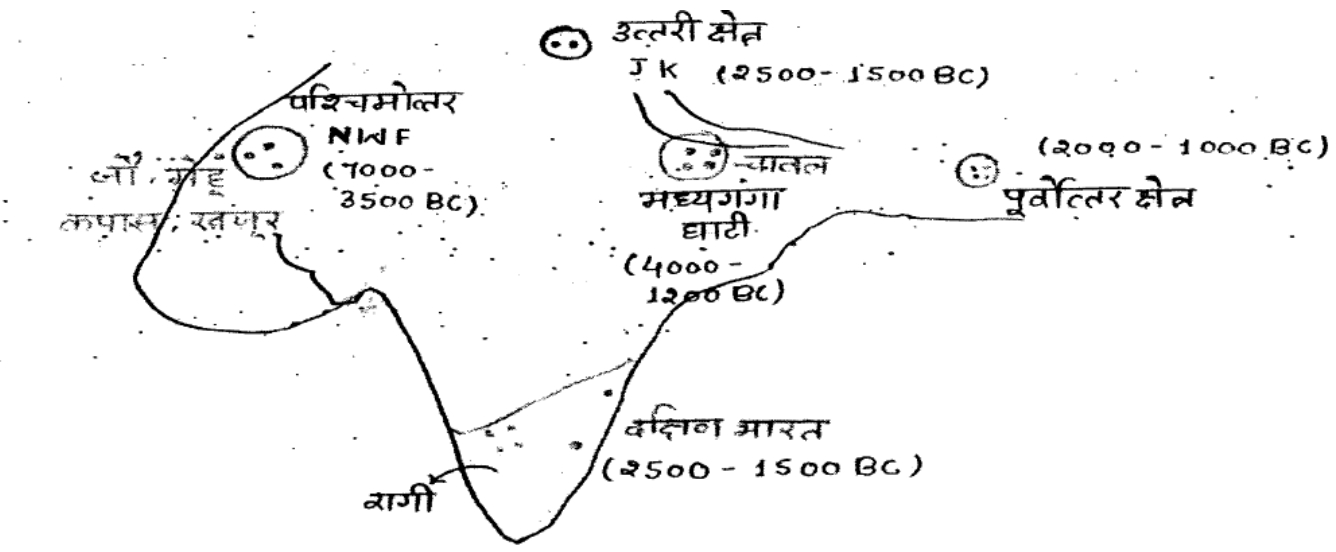

भारतीय नवपाषाण की क्षेत्रीय विविधता :-

पश्चिमोत्तर की नवपाषाणिक संस्कृति (7000-3500 BC) - इसके तहत मेहरगढ, सरायबोला, किलिगुलमुहम्मद, राणाघुण्डई आदि स्थल आते हैं। इनमें मेहरगढ सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल है। यहां से जौ के दो तथा गेहूं की तीन किस्मों, खजूर, कपास (विश्व में प्रथम) के खेती के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं। यहां पशुपालन भी महत्वपूर्ण व्यवसाय था। इनकी बस्तियाँ मुख्यतः घास - फूस की थीं। लेकिन कहीं - कहीं कच्ची ईंटों के चार कमरों वाले मकान भी बनाये गये थे। यहां से अन्नागार भी प्राप्त हुआ है। मृतकों के साथ यहां जानवरों (बकरी) को दफनाया जाता है। इससे लगता है कि वे परलोक, आत्मा आदि में विश्वास करते होंगे।

उत्तरी क्षेत्र (2500- 1500 BC)

यहां के महत्वपूर्ण स्थल बुर्जहोम तथा गुफ्फरकाल हैं। यहां का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। कृषि द्वितीयक व्यवसाय था। यहां के लोग गर्तावास (जमीन में गड्ढा खोदकर रहना) में रहते थे।

बुर्जहोम से मालिक के साथ कुत्ते को दफनाये जाने के साक्ष्य मिले हैं। यहां से पत्थर के औजार नहीं मिले हैं। लेकिन जानवरों की हड्डियों के औजार भारी मात्रा में मिले हैं।

दक्षिण भारत (2500 - 1500 BC)

यहां के महत्वपूर्ण स्थल निम्न हैं –

– कर्नाटक मास्की, ब्रह्मगिरि, हलन, पिकलीहल (यहां से काफी संख्या में गोबर राख के टीले मिले हैं), संगनकल्लू
– आन्ध्र प्रदेश - उतनूर
- तमिलनाडु - पयमपल्ली

दक्षिण भारत में भी पशुपालन मुख्य व्यवसाय था। कृषि द्वितीयक था। यहां की मुख्य फसल रागी (चारा) थी। यहां की लगभग सभी बस्तियों से भारी मात्रा में गोबर राख के टीले मिले हैं ।

मध्यगंगाघाटी (4000- 1200 BC)

यहां के प्रमुख स्थल कोल्डिहवा, महगडा, चोपानीमांडो महदडा आदि है। कोल्डिहवा (6000 BC) से धान की खेती के (जंगली तथा बोया जाने वाला दोनो किस्म) प्रमाण प्राप्त हुये हैं। पूर्व में इसे सबसे प्राचीन तिथि माना जाता था (चावल के मामले में) लेकिन हाल ही में लहुरादेव (संतकबीरनगर UP) से 8000 BC मे चांवल की खेती किये जाने के प्रमाण मिले हैं। अतः अब इसे सबसे प्राचीन तिथि माना जाता है।

उत्तरी - पूर्वी क्षेत्र (2000 - 1000 BC)

यहां के महत्वपूर्ण स्थल असम के कच्छारी मैदानों में सारातारू, मरकडोला तथा देवा जालिहेडिंग हैं। यहां भी पशुपालन मुख्य व्यवसाय था कृषि पर कम बल दिया जाता था। यहां के औजार दक्षिणी पूर्वी एशिया के औजारों से मिलते जुलते हैं। अतः कुछ विद्वान मानते हैं कि दोनों में सम्बन्ध था।

अन्य क्षेत्र की नवपाषाणिक बस्तियां

अन्य क्षेत्रों में चिरांद (छपरा, बिहार यहां से पत्थर के औजार नहीं मिले हैं लेकिन हिरण के सींग पर बने औजार भारी मात्रा में मिले हैं) पांडुरजारढिबि तथा महिषडल (दोनों पं. बंगाल) तथा कुचाई (उडीसा) आदि मुख्य हैं ।

जीवाश्मों / पुरावस्तुओं का तिथि निर्धारण

- निरपेक्ष तिथि निर्धारण विधि
  Absolute dating method
  ↓
  वस्तुओं के भौतिक + रासायनिक गुणों के विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।
  - C_{14} dating
  - k-Ar dating
  - thermo lumines cena
  - Dendro chronology
- सापेक्ष तिथि निर्धारण
  Relative dating
  ↓
  इसका निर्धारण उत्खनन के स्तरों के सामान्य समझ तथा वस्तुओं की तुलना करके किया जाता है।

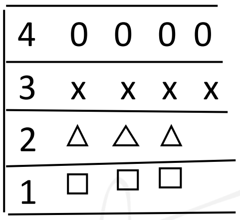

बाहरी

निरपेक्ष तिथि निर्धारण विधियां

(1) <u>C_{14} डेटिंग</u> – C_{14} तिथि निर्धारण कार्बन के दो समस्थानिकों – C_{12} एवं C_{14} के आपसी विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। यह केवल जीवित जीवों जो मर चुके हैं (animal and plants) के मामले में ही किया जाता है। इसकी खोज अमेरिकी वैज्ञानिक विलियर्ड लिब्बा ने की थी। इसके लिए उन्हें 1949 में केमिस्ट्री का नोबेल प्राप्त हुआ था।

(2) <u>पोटैशियम</u> – ऑर्गन (K—Ar) dating : निर्जीव वस्तुओं के मामले में विशेषतः चट्टानों के मामले में इसका प्रयोग किया जाता है।

K- Ar40 Change - Radioactive

यह सभी ज्ञात विधियों में सबसे प्राचीन तिथि निर्धारण करने वाली विधि है। चट्टानों के अत्यंत प्राचीन तिथि का निर्धारण करने में इसका इस्तेमाल किया जाता है (मुख्यतः भूगर्भ विज्ञान Geology में)

(3) <u>Thermoluminescene</u> :–

यह इस सिद्धांत पर आधारित होता है कि अपने निर्माण के दौरान सभी वस्तुएं वातावरण से स्वतंत्र इलेक्ट्रॉन ग्रहण करती हैं। अगर वस्तुओं को 500^0 C तापमान पर गर्म किया जाये तो ये संचित इलेक्ट्रॉन को निर्युक्त (release) कर देती है। जिन्हें मापकर वस्तुओं की तिथि निर्धारित की जा सकती है। इस विधि का इस्तेमाल अधिकांशतः मृदभांडों के तिथि निर्धारण में किया जाता है।

(4) <u>वृक्ष वलय सिद्धान्त</u>

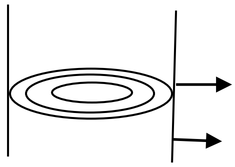

Ring pattern का विश्लेषण करके किया जाता है। सामान्यतः 1 साल में एक Ring (वलय) बनता है। Maximum – 1100 yr.

ताम्रपाषाण काल

हड़प्पा पूर्व ताम्रपाषाणिक संस्कृति	हड़प्पा सभ्यता/ शहरी सभ्यता	हड़प्पा बाद ताम्रपाषाणिक संस्कृति
(2500 – 2600 BC)	(2600 – 1900 BC)	(2000 – 100 BC)

हड़प्पा पूर्व ताम्रपाषाणिक संस्कृति :-

हड़प्पा सभ्यता से पहले आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां विद्यमान थी। जो निम्न हैं –

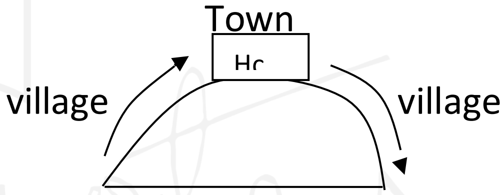

अफगानिस्तान स्थित स्थल : मुंडीगाक, देहमुरासीघुण्डई

पाकिस्तान स्थित स्थल : राणाघुण्डई, किलिगुलमुहम्मद, कुल्ली, नाल, आमरी, कोटदीजी

भारत स्थित स्थल : कालीबंगा, राखीगढ़ी, बनावली

हड़प्पा पूर्व के उपरोक्त ताम्रपाषाणिक लोग ग्रामीण संस्कृति के लोग थे। इनके घर या आवास घास-फूस की झोपडियों के बने थे। कहीं-कहीं इन्होनें कच्ची ईटों का प्रयोग भी घर बनाने में किया है। ये तांबा, पीतल तथा चांदी का प्रयोग करते थे। इन्होनें किलाबन्दी भी किया है तथा अनाज रखने के लिए अन्नागार भी बनाये हैं। ये दूरस्थ व्यापार भी करते थे। इनमें से अधिकांश बस्तियाँ हड़प्पा के शहरी चरण में परिवर्तित हो गईं।